OM - 14 - 2021 FINAL_Page 1 and 2 28/09/2021 5:11 PM Page 2

ज्ञान और अज्ञान से तय होता सुख और दुःख

आज व्यक्ति को परमात्म ज्ञान मिल जाये तो उसका जीवन वरदान से कम नहीं होगा। ईश्वरीय ज्ञान उसके जीवन में खुशहाली ला देगा। ज्ञानी भल रहेगा तो इसी संसार में, परंतु उसके चेहरे से खुशी झलकती रहेगी। इस संसार की हालातें उसकी खुशी छीन नहीं सकतीं। क्योंकि उसे पता है कि जीवन एक खेल है, उसे खेल की तरह ही जीना है। खेल में कभी हार, कभी जीत। ये सिक्के के दो पहलू हैं, ये उसे निरंतर स्मृति में रहता है। जिसके कारण उसका स्मित सदा बना रहता है। उसकी मन-बुद्धि श्रेष्ठ ज्ञान से श्रृंगारित रहती है, जिससे वो भली-भांति जब चाहे, जैसे चाहे उसका प्रयोग व उपयोग कर अपने को खुश रख सकता है। परमात्म ज्ञान जैसे कि एक वरदान की तरह उसके जीवन का अंग बन जाता है। क्योंकि उसको निश्चय रहता है कि परमात्मा द्वारा दिये गये ज्ञान से उसका कभी भी अकल्याण नहीं हो सकता।

ज्ञानी और अज्ञानी में फर्क है कि 'ज्ञानी मरते हुए भी हँसता है और अज्ञानी जीते हुए भी मरता है।' ज्ञान हँसना नहीं सिखाता, बस रोने का कारण मिटा देता है। ऐसे ही अज्ञान रोने नहीं देता,

ब्र.कु. गंगाधर

बस हँसने के कारणों को समाप्त कर देता है। ज्ञानी इसलिए हर हाल में खुश रहता है क्योंकि वो जानता है, जो मुझे मिला है, वह कभी मेरा था ही नहीं। और जो कुछ मुझसे छूट रहा है, वह भी मेरा नहीं। परिवर्तन ही संसार का नियम है। अज्ञानी इसलिए रोता है क्योंकि उसकी मान्यता है कि जो कुछ उसे मिला है, उसी का था और उसी के दम पर ही मिला है। जो कुछ छूट रहा है, उस पर अपना अधिकार मान कर बैठा है। यही अशांत होने का मुख्य कारण है। मूढ़ता में नहीं, ज्ञान में जीना अच्छा है, ताकि आप हर परिस्थिति में खुश रह सकें।

वास्तव में अज्ञानी व्यक्ति सांसारिक ज्ञान का सहारा लेकर विनाशी प्राप्तियों के लिए सतत् प्रयत्नशील रहता है, फिर चाहे वह धन और वस्तुओं का संग्रह हो अथवा पद-पोज़ीशन की उपलब्धियां हों या सम्बंधों का विस्तार हो या तेरे-मेरे की भावनाएं हों। वह भूल जाता है कि यह सब कुछ ज़्यादा समय तक नहीं रहने वाला। इन सबको भोगने वाला शरीर भी वह एक निश्चित अवधि के बाद छोड़ देगा।

वह बेचारा तो इतनी मोहपाश की जंजीरों में बंधा हुआ धीरे-धीरे उस अंधेरी सुरंग में भटकता रहता है जहाँ ना तो कुछ दिखाई देता है और न ही कुछ सूझता है। जब वह स्वयं को बहुत थका हुआ और ठगा हुआ महसूस करता है, तब उसे भगवान की याद आती है। परंतु तब तक समय हाथ से निकल चुका होता है। अब तो उसकी स्वयं की कर्मेन्द्रियां भी प्रभु को याद करने के लिए साथ नहीं देतीं और मन चंचल घोड़ों की तरह व्यवहार करता है।

अब हमारी समझदारी इसी में है कि समय रहते हम अपने सत्य स्वरूप को पहचान लें और अपने लक्ष्य के प्रति सजग हो जायें। साथ ही साथ परमात्मा के साथ अपने अटूट सम्बंध को भी स्थापित कर लें। क्योंकि परमात्मा वो खिवैया है जो इस मुश्किलों भरे संसार से पार ले जाने में हमारी मदद करता है। परमात्मा ज्ञान और प्रेम का सागर है, सर्वशक्तिवान है, वो ही निष्काम प्रेम और निःस्वार्थ मदद करता है।

अतः उन पर अटूट निश्चय रख, अटूट नाता बनाकर उनसे घनिष्ठ सम्बंध स्थापित कर लेने में ही हमारी भलाई है, हमारा कल्याण है। बस हमारी तरफ से कोई कमी न रह जाये जो दाता दे रहा है उसका फायदा हम उठा न सकें। उनका प्रेम, उनका दिल हमें जीत लेना है, वो तो देने के लिए ही आया है। हम पर निर्भर है कि हम कितना उससे लेने में समर्थ हैं।

हमें बस इस मायावी चक्रव्यूह से अपने आप को बचा के रखना है। कभी भी, किसी भी बात में, किसी भी परिस्थिति में स्वयं को उलझा नहीं लेना है। क्योंकि इन उलझनों के दलदल में एक बार फिसले तो फिर उससे निकल पाना लगभग नामुमकिन होगा। इस समय परमात्मा का ज्ञान हमें खुद को श्रेष्ठ बनाने के लिए है। उसे गंवाना नहीं है। भगवान तो हर सम्बंध निभाने को तैयार है, एक बार उससे सम्बंध बना कर तो देखो। उसका साथ है, तो ऐसा है, 'जो एक आम आदमी को भी खास बना देगा'।

इस समय प्रभु वरदान की बेला है, इसमें समझ-बूझ कर अपने को संवारना है। यही ज्ञानी की समझदारी है। अज्ञानी और ज्ञानी रहेंगे तो इसी संसार में, पर एक के चेहरे पर दुःख की लकीरें होंगी और दूसरे के चेहरे पर खुशियों की लहरें। ज्ञानी संसार में रहते भी संसार उसमें नहीं रहेगा, परिणामस्वरूप उससे प्रतिबिम्बित होने वाले सुख व दुःख उसे छू भी नहीं पायेंगे, और वो उन सब से परे परमानंद की स्थिति में रहेगा।

अथॉरिटी और अधिकारी... ये दो शब्द याद रखो

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

कोई भी संकल्प उठना माना अपने में संशय आना, संशयबुद्धि विनश्यन्ती। अपने आप में ही संशय उठता है, पता नहीं होना तो चाहिए, होना तो है ही... होगा या नहीं माना संशय। अपने में पूरा निश्चय नहीं है। अपने में निश्चय है तो विजय है। एक होना ही है, दूसरा हाँ देखेंगे, कर तो रहे हैं, पता नहीं...तो कौन सा अच्छा लगता है? होना ही है। क्योंकि सर्वशक्तिवान बाबा है ना। बाबा की अथॉरिटी में बहुत नशा होना चाहिए। तो सीट पर सेट हो जाओ। मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, यह है निश्चय की सीट पर सेट होना। बिना सीट के कोई नहीं, इसलिए अथॉरिटी और अधिकारी, यह दो शब्द याद रखो। अपनी अथॉरिटी याद ही नहीं है तो अपना अधिकार किस पर रहेगा! बाबा कहते बच्चे आपकी वाणी निर्मल हो, भावना निमित्त भाव की हो, निर्मान बनके सेवा करो। अगर निर्मान है तो मान मिलेगा। स्वमान में रहो तो मान मिलेगा। मांगने से मान नहीं मिलता। अगर संकल्प भी रखेंगे कि मुझे तो कोई पूछता ही नहीं है, मैं इतना कुछ करती हूँ, देखते ही नहीं हैं मैं क्या कर रही हूँ, कैसे कर रही हूँ... जैसे मैं हूँ या नहीं हूँ, किसी को पता ही नहीं पड़ता है। सेवा करके आते हैं तो भी नहीं पूछते हैं। लेकिन वो नहीं पूछती कोई बात नहीं, पर

अगर निर्मान है तो मान मिलेगा। स्वमान में रहो तो मान मिलेगा। मांगने से मान नहीं मिलता।

बाबा की सेवा करने से खुशी रूपी अमृत तो पी लिया ना, अगर सच्ची सेवा की तो। अभिमान वाली की, फिर तो नहीं मिलेगा। लेकिन जब सच्चे दिल से हम सेवा करते हैं तो बाबा के प्यार का प्याला मिलता है, खुशी का प्याला कितना पीते हैं। तो बाबा ने आपको पूछ लिया, बाकी कोई ने नहीं पूछा तो क्या बात है! आखिर भी फैसला कौन करेगा? किसको क्या पद देना है, बाबा ही फैसला करेगा ना! तो हमारे को बाबा पूछने वाला है। रात्रि को सोओ तो जैसे बाबा मालिश कर रहा है, माथे में बहुत ताकत दे रहा है, ऐसे अनुभव करते सो जाओ। बाबा तो रोज़ आपकी पालना करते हैं। बस, बाबा की गोद में सो जाओ। लेकिन बाबा की कोइ स्थूल में तो गोदी है नहीं। गोदी माना बाबा की याद, बाबा की श्रीमत। बाबा की याद में सोयेंगे तो जैसे एकदम बाबा की गोदी में सो गये, ऐसा अनुभव होगा। बाबा मिला, भाग्य मिला... यह फीलिंग भले करो। बाकी छोटी-छोटी बातों की फीलिंग नहीं करो। क्योंकि फीलिंग करना माना दुःख लेना दुःख देना।

केवल समर्थ संकल्प ही करना है हमें... व्यर्थ कुछ न हो

संकल्प

राजयोगिनी दादी जानकी जी

कोई भी कारण से व्यर्थ संकल्प न आये, इसके लिए अपने संकल्प की क्वालिटी फर्स्टक्लास हो। परमधाम निवासी बाबा को जिस प्रकार संकल्प आया, जिस संकल्प से बाबा ने हम बच्चों को पैदा किया है। बाबा बच्चों को टच करता है, खींचता है, प्रैक्टिकल करने की शक्ति भी देता है। अपनी स्व उन्नति के लिए या सेवा के लिए कोई काम का संकल्प है तो करो, इस संकल्प में क्या फायदा है, वो देखो। हमारे को कैसा संकल्प करना चाहिए, बाबा वो सिखाता समझाता है। संकल्प में भी चार बातें हैं - एक है स्वयं की कोई कमज़ोरी, दूसरी है कमी, तीसरी है आदत और चौथी है उसी अनुसार घड़ी-घड़ी किसी बात का चिंतन। जैसे कोई को बीड़ी सिगरेट की आदत है, तो उसी का चिंतन चलता है। ऐसे बिना काम के संकल्प करने की आदत नहीं छूटती है। जो किया है या करना है, वो भी फालतू संकल्प चलता रहता है। अभी कुछ करना है, इसके बाद करना है, कर लेंगे - लेकिन अभी उसका संकल्प क्यों आये! बार-बार वही ख्याल क्यों आये? तो अन्दर डीप साइलेंस में जाना माना अन्तर्मुखी होना। यह अन्तर्मुखता भी क्या है, उसकी गहराई में जायें। बाहरमुखता तो नैचुरल है, भले अच्छे तरीके से कहेंगे परन्तु वो है बाहरमुखता। अन्तर्मुखता माना मन-बुद्धि से बाबा के कनेक्शन में रह अपनी अलौकिक स्थिति में मस्त रहना। कभी किसी के प्रति अगर अन्दर में द्वेष भाव है तो अन्तर्मुखता नहीं है। जैसे बाबा हमारे अन्दर को जान करके हमारे अन्दर में परिवर्तन लाना चाहता है। यही तो परमात्मा की कमाल है।

मुक्ति वर्ष में संस्कारों से मुक्त हो सम्पन्न बनने का चार्ट बनाओ

योग का बल सेवाओं को सफल करने में मदद करता है। तो चारों तरफ योगबल के साइलेन्स की शक्ति के वायब्रेशन फैलाओ जो अनेकों के अनेक उल्टे-सुल्टे फालतू के विघ्न होते, समाज के, पब्लिक के, गांव के या शहरों में जो उल्टे वायब्रेशन हैं, वह सब इस सूक्ष्म योगबल से समाप्त हो जाएं। योगबल से ही हमारी विजय है।

वैरागी-त्यागी

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हमारी मैनेजमेंट पहले चलती है संकल्पों से, हमारे शुभ संकल्प सदा रहें इसकी कन्ट्रोलिंग सीखो ताकि सूक्ष्म व्यर्थ समाप्त हो जायें और उसी ही अलौकिकता से हमारी आपस में दृष्टि और वृत्ति रहे जिससे शुभ भावनाओं की सकाश मिलती रहे। ऐसी शुभ सकाश एक दो में दो भी, लो भी। तो इस मुक्ति वर्ष में संस्कारों से मुक्त हो, सम्पन्न बनने का चार्ट बनाओ। और वह सम्पन्न स्थिति की रिजल्ट का चार्ट हर एक बाबा को दो। योग का बल सेवाओं को सफल करने में मदद करता है। तो चारों तरफ योगबल के साइलेन्स की शक्ति के वायब्रेशन फैलाओ जो अनेकों के अनेक उल्टे-सुल्टे फालतू के विघ्न होते, समाज के, पब्लिक के, गांव के या शहरों में जो उल्टे वायब्रेशन हैं, वह सब इस सूक्ष्म योगबल से समाप्त हो जाएं। योगबल से ही हमारी विजय है। जैसे दिनोंदिन हम देखते हैं कि सर्विस में कितनी सहज सफलता है, प्रगति है या कितनी वृद्धि हो रही है, यह आप सब भी अनुभव करते हैं। समय प्रमाण अभी हम सब आपस में इतना मिलकर स्नेह से रहें जो सभी कहें कि दो शरीर हैं परन्तु आत्मा एक है। बाबा का यह शब्द पक्का हो कि एवररेडी बनना है। हमारे कारण कभी बाबा की बदनामी न हो। जबकि हम सबको इतना ऊंचा बाबा मिला है तो ऊंचे बाबा के साथ स्थिति भी इतनी ऊंची बनाओ, जिसके लिए बाबा ने दो बातें कही हैं : 1. बेहद के वैरागी बनो। 2. बेहद के त्यागी बनो। तो बाबा की आज्ञाओं को प्रैक्टिकल रूप देना है। एवररेडी बनना है, बेहद के वैरागी बनना है, बेहद के त्यागी बनना है और सन्तुष्टता की खान बनकर रहना है।

संगठन में रहते मतभेद न हो, इसके लिए पहले एक दो के विचारों को सम्मान देकर सुनना चाहिए। तो दिल में चाहिए सम्मान। सम्मान देकर निर्णय करेंगे तो उस निर्णय को दोनों मानेंगे। फिर भी वन टू होता है तो यह नॉलेज हमें सिखाती है - बड़ों की रिस्पेक्ट करो, छोटों को प्यार करो। अगर दो छोटे बड़े भी होंगे तो छोटों को प्यार से कहेंगे, बड़े को सम्मान से कहेंगे, तो भी मान लेंगे। अगर दोनों को सम्मान से बोलेंगे तो भी वह मान जायेंगे।